लड़की

जब वो पैदा हुई थी
सगे सम्बधियों की छाती का बोझ बढ गया था ।
सोहर तो हुआ था, पर स्वर दबा सा था ।
वो गति से बढने लगी थी
नाक नक्श सुमन सा था ।
सिना–पिरोना सीख गयी थी ।
चिन्ता की लकीरें,
बाप के माथे पर उभर रही थी ।
अभिलाषाओं के दमन की तैयारी थी ।
वो जन्मजात परायी थी ।
यौवन की दहलीज चढी भी नही की,
सात फेरो में उलझ गयी थी ।
चुटकी भर सिन्धुर के भार दब गयी थी ।
भारती वो एक लड़की थी । नन्दलाल भारती